(स्वामी अवधेशानन्द गिरि जी महाराज, प्रभु प्रेमी संघ शिविर, उज्जैन)

प्रकाशनार्थ -

23 अप्रैल, 2016, उज्जैन । पूज्य बापू ने कथा रसिकों को समझाते हुए कहते हैं कि गुरु साधन नहीं साध्य है। गुरु लक्ष्य है। आखिरी परम तत्व है। मंज़िल है। जब तक नयन शुद्ध न हो तबतक वयन (वचन) की कोई महिमा नहीं । मोह से पैदा संशय को समाज से नष्ट करना ब्राह्मण का काम है। वही पृथ्वी के देवता हैं। जंगम तीरथराज कह संत्समाज की वंदना की । ईर्ष्या से सुख नहीं मिलता, निंदा से बुद्धि निर्णायक नहीं होती , द्वेष करने से चित्त अशांत रहता है । कुछ कुछ उपलब्धि से जो उन्मत्त हो जाता है उसका अहंकार नहीं जाता।

जूनापीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि जी महाराज नें कहा - भवभंजिका क्षिप्रा के पावन तट पर यहाँ के राजाधिराज भूतभावन भगवान महाकाल, यहाँ के देवता काल भैरव, मंगलनाथ, माता हरसिद्धि, चिन्तामणि भगवान गणेश, योगी, याति, सन्यासी, सूक्ष्म अज्ञात देव सत्ता, भारतीय संत परंपरा के गौरव सबल सतगुरूदेव महाराज के पावन श्री चरण, क्षिप्रा की सुरसरिता की धवल धार पर गूँजता हुआ अमीय रससिद्ध स्वर पं जसराज जी , पौरव्यात्मक और पश्चिमात्मक दोनों धाराओं में निषणात् पूज्य स्वामी चिदानंद जी , प्रभु प्रेमी संघ की अनेक शाखाओं की संचालिका, भारतीय साध्वी परिषद की अध्यक्षा महामंडलेश्वर स्वामी नैसर्गिका गिरि जी , सिंहस्थ कुम्भ के प्रभारी मध्यप्रदेश सरकार के वरिष्ठ मंत्री आदरणीय भूपेन्द्र सिंह जी, आप सबकी उपस्थिति से मैं कृतज्ञ हूँ, अनुग्रहित हूँ । आपकी पावन उपस्थिति पर मै अपनी प्रसन्नता व्यक्त करता हूँ ।

पूज्य मोरारी बापू ने आज प्रभु प्रेमी संघ शिविर में व्यास पीठ से कथा रसिकों से कहा कि महाकाल की धरती पर श्री रामकथा का केंद्रीय विचार महाकाल हैं इसलिए यह कथा "मानस महाकाल" है। रुद्राष्टकम् की दो पंक्तियों से महाकाल का अभिषेक करेंगे। निराकार ओंकार मूलं तुरीयं ...। परंपरा प्रवाही होनी चाहिए। जब परम्पराएँ जड़ हो जाती हैं तब कुरूप हो जाती हैं। प्रथम दिवस सद्ग्रन्थ से परिचय कराना आवश्यक है। जब तक परिचय नहीं होगा तब तक विश्वास नहीं आता। यह सद्ग्रन्थ दृढ़ता देने वाला ग्रन्थ है। जब व्यक्ति का सद्ग्रन्थ में विश्वास हो जाता है तो चौपाई नर्तन करने लगती है। श्लोक अर्थ खोलने लगते हैं। जो व्यक्ति महाभारत -रामायण के बारे में नहीं जानता उसको हिंदुस्तानी होने का अधिकार नहीं। मानस महाकाव्य है। रामचरित मानस महामंत्र है। जो साधक इसका अनुष्ठान पारायण करेगा उसके कुअंक मिट जाते हैं। सवाल है दृढ भरोसे का।

गोस्वामी तुलसीदास समन्वय की साधना करते हैं। नानापुराण निगमागम सम्मतं यत्...। ग्रन्थ प्रलोभन और भय भी दिखाते हैं लेकिन सद्ग्रन्थ अभयता देते हैं। अभय होने के लिए बुद्ध पुरुष के चरणों में बैठ कर सद्ग्रन्थ में प्रवेश पाता है वह अभयता को प्राप्त होता है। जो जोड़े वही धर्म है। दो धर्मों के बीच कभी संघर्ष नहीं होता। हम सनातन धर्मावलंबी पञ्च देवोपासक है । गणपति यानि

विवेक की साधना, सूर्य यानि प्रकाश की साधना, विष्णु यानि विराटता औदार्य की साधना, शिव यानि दूसरों के कल्याण की कामना, दुर्गा यानी सबके हितों की रक्षा ।

सायंकालीन भजन संध्या में सुप्रसिद्ध भजन गायक शर्मा बंधुओं का गायन संपन्न होगा ।

मीडिया सेल
प्रभु प्रेमी संघ शिविर उज्जैन
उजरखेड़ा, भूखीमाता चौराहे के पास, बड़नगर रोड उज्जैन
सम्पर्क - 09991537200